दशम अध्याय

11119CH10

आधुनिक संस्कृत साहित्य

संस्कृत साहित्य की धारा निरन्तर प्रवाहित हो रही है। भारत में सम्राट् पृथ्वीराज के अनन्तर बारहवीं शताब्दी मुस्लिम शासनसत्ता स्थापित हो जाने के बाद राजदरबारों में अरबी-फारसी का वर्चस्व स्थापित हो गया, किन्तु संस्कृत में रचनाएँ होती ही रहीं। मुगलकाल में अनेक उत्कृष्ट महाकाव्य तथा अन्य रचनाएँ की गईं, जिनमें *आसफविलास:*, *जहाँगीरचरितम्*, *शेकशुभोदयम्*, *पारसीकप्रकाश:*, *चिमनीचरितम्* आदि मुख्य हैं।

कुछ विद्वानों का मानना है कि संस्कृत रचना का युग सत्रहवीं शताब्दी के साथ समाप्त हो गया। प्राय: लोग पण्डितराज जगन्नाथ को ही संस्कृत का अन्तिम कवि तथा अलंकारशास्त्री आचार्य मानते हैं। विद्वानों द्वारा लिखित संस्कृत साहित्य के इतिहास ग्रंथों ने इस भ्रान्ति को पुष्ट किया। ए.बी. कीथ, बलदेव उपाध्याय, चन्द्रशेखर पाण्डेय तथा कृष्णमाचारी आदि किसी भी लेखक ने अपने ग्रन्थ में उन्नीसवीं-बीसवीं शताब्दी ई. की रचनाधर्मिता को सम्मिलित नहीं किया है। स्वातंत्र्योत्तर-काल में इस ओर विद्वानों का ध्यान गया है। अनेक सत्य उभर कर सामने आये हैं, जैसे—

1. पिछली शताब्दी (1901–2000 ई.) से अब तक संस्कृत में प्राय: 350 महाकाव्यों की सर्जना हुई है। कुछ महाकाव्य तो 64 और 84 सर्ग के भी हैं।
2. पाश्चात्त्य काव्यशास्त्र की अनेक लोकप्रिय विधाएँ— गीतिकाव्य (Lyrical Poetry), लघुकथा (Short Story), उपन्यास (Novel), एकांकी (One- act play) तथा सानेट आदि उन्नीसवीं शताब्दी ई. अर्थात् ब्रिटिश शासनकाल में ही संस्कृत में भी लोकप्रिय हुईं तथा रचनाधर्म के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गईं।

पं. अम्बिकादत्त व्यास ने उन्नीसवीं शताब्दी में ही अपना प्रसिद्ध उपन्यास शिवराजविजय लिखा। हरिदास सिद्धान्तवागीश, मूलशंकर माणिक्यलाल याज्ञिक तथा मथुरानाथ दीक्षित के नाटकों की रचना भी अगले चरण में हुई। उमापति द्विवेदी, काशीनाथ तथा हरिदास सिद्धान्तवागीश के महाकाव्य (*पारिजातहरण*, *रुक्मिणीहरण*) भी इसी काल की रचनाएँ हैं।

Reprint 2025-26

आधुनिक संस्कृत साहित्य की तीसरी सबसे बड़ी विशेषता थी— व्यवस्था के प्रति विद्रोह। यह विद्रोह 1835 ई. में लागू लार्ड मैकाले की भाषा नीति का परिणाम था। ज्ञातव्य है कि प्रारम्भिक चरण में गवर्नर जनरल हेस्टिंग्ज तथा कार्नवालिस ने संस्कृत को ही राजभाषा पद पर रखा। शासकीय संरक्षण पाते ही संस्कृत की प्रसुप्त रचनाधर्मिता पुन: प्रबुद्ध हो उठी। चार्ल्स विल्किंस ने *गीता* को अंग्रेजी में अनूदित किया। अंग्रेजी व्याकरण को *इंगलैण्डीयव्याकरणसार:* के रूप में प्रस्तुत किया गया। *विवादसारार्णव:* नामक एक कानून का ग्रन्थ हेस्टिंग्ज ने तैयार करवाया तथा स्वयं उसे अंग्रेजी में भी अनूदित किया। कार्नवालिस ने काशी में अपने रेजिडेण्ट लार्ड जोनाथन डंकन की संस्तुति पर 1791 ई. में बनारस संस्कृत पाठशाला की स्थापना की, जो आज सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है।

परन्तु लार्ड मैकाले ने संस्कृत को ब्रिटिश राज्य के विस्तार में बाधक माना तथा इंग्लैण्ड की संसद से नई भाषा नीति पारित करा दी। अब अंग्रेजी राजभाषा बन गई। इसका सम्पूर्ण भारत में घोर विरोध हुआ। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, अप्पाशास्त्री राशिवडेकर, स्वामी दयानन्द सरस्वती तथा महर्षि अरविन्द आदि ने समय-समय पर संस्कृत का पक्ष लेकर घोर संघर्ष किया।

उन्नीसवीं शताब्दी की संस्कृत कविता में यही संघर्ष व्यवस्था के प्रति विद्रोह के रूप में अभिव्यक्त हुआ है। 1884 ई. में कांग्रेस की स्थापना के बाद यह संघर्ष 'स्वाधीनता संग्राम आन्दोलन' के रूप में परिवर्तित हो जाता है और सम्पूर्ण संस्कृत रचनाधर्मिता इसी एक बिन्दु पर केंद्रित हो उठती है।

कुछ लोग 'आधुनिक संस्कृत साहित्य' शीर्षक के औचित्य पर प्रश्न उठाते हैं। उनका तर्क यह है कि आधुनिकता किसका धर्म है? काल का अथवा साहित्य का? इसका उत्तर यही है कि अतीत, अनागत तथा वर्तमान— ये काल के ही धर्म हैं। परन्तु इन्हीं कालखण्डों से जुड़ा साहित्य भी उपचारवश प्राचीन, वर्तमान तथा भावी कहा जा सकता है। इस प्रकार 'आधुनिक संस्कृत साहित्य' का अर्थ हुआ आधुनिक काल से जुड़ा संस्कृत साहित्य।

अब दूसरा प्रश्न यह है कि 'आधुनिक काल' संस्कृत रचना में कब आया? इस सन्दर्भ में प्रो. राजेन्द्र मिश्र, डॉ. जगन्नाथपाठक एवं प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी आदि ने गहन विचार किया है। प्रो. राजेन्द्र मिश्र सन् 1784 ई. में सर विलियम जोन्स द्वारा अंग्रेजी में किए गए *अभिज्ञानशाकुन्तल* के अनुवाद से ही संस्कृत रचना में आधुनिक काल का अवतरण मानते हैं। इसके कई कारण हैं, जो क्रमश: प्रस्तुत हैं—

Reprint 2025-26

1. शाकुन्तल के अंग्रेजी अनुवाद से ही चिरकाल से अवरुद्ध संस्कृत रचनाधर्मिता का पुनरारम्भ हुआ। मौलिक सर्जना, समीक्षा, भाषान्तर तथा शोध की संभावना के द्वार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खुले।
2. संस्कृत को विश्वभाषा (Universal Language) की मान्यता मिली।
3. संस्कृत रचना में, पारम्परिक प्रतिपाद्य का स्थान नवयुगीन चेतना ने ले लिया।
4. पाश्चात्त्य जगत् के काव्यशास्त्रीय मानदण्ड संस्कृत में घुलमिल कर एकाकार हो गए।
5. आधुनिक संस्कृत साहित्य प्राचीन काव्य शास्त्रीय निर्देशों, बन्धनों तथा लक्षणों से मुक्त होकर लिखा जाने लगा।
6. आधुनिक सर्जना भाषा की सरलता, नवयुगीन सामाजिक चेतना से जुड़ाव, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की समीक्षा तथा वैदेशिक छन्दों एवं काव्यविधाओं की स्वीकृति के कारण उत्तरोत्तर लोकप्रिय हुई है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य कविता, कहानी, नाट्य तथा समीक्षादि किसी भी क्षेत्र में भारत की अन्य भाषाओं में प्रणीत आधुनिक साहित्य के समक्ष अथवा उससे भी परतर प्रतीत होता है।

पहले सप्रमाण निरूपित किया गया है कि विगत एक सौ वर्षों की अवधि में संस्कृत साहित्य की सभी प्राचीन विधाओं के अतिरिक्त, पाश्चात्त्य साहित्य में प्रमुख विधाओं से भी प्रभावित साहित्य की रचना पर्याप्त परिमाण में हुई है। सम्पूर्ण भारत में विभिन्न विद्वानों तथा कवियों ने संस्कृत के सर्वाङ्गीण विकास की दृष्टि से सहस्राधिक ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें अनेक कृतियाँ प्रकाशित हैं। उन पर समीक्षा ग्रन्थ भी आधुनिक भाषाओं में लिखे गए हैं। यहाँ अब संस्कृत की मौलिक साहित्यिक कृतियों तथा उनके लेखकों का सामान्य निर्देश किया जा रहा है—

- **अर्वाचीन महाकाव्य**— साहित्यिक विधाओं में महाकाव्य रचना सबसे अधिक हुई है। न केवल प्राचीन कथानकों पर अपितु आधुनिक घटनाओं, महापुरुषों तथा ऐतिहासिक विषयों पर भी संस्कृत महाकाव्य प्राचीन लक्षणों का ध्यान रखते हुए लिखे गए हैं। उमापति द्विवेदी कृत *पारिजातहरण*; प्रभुनाथ शास्त्री कृत *गणपतिसम्भव*; कृष्ण प्रसाद शर्मा कृत *श्रीकृष्णचरितामृत*; विन्ध्येश्वरी प्रसाद कृत *कर्णार्जुनीय*; वसन्त त्र्यम्बक शेवडे कृत शुम्भवध; काशीनाथ द्विवेदी कृत रुक्मिणीहरण; रेवाप्रसाद

Reprint 2025-26

द्विवेदी कृत *सीताचरित*; राजेन्द्रमिश्र कृत *वामनावतरण* तथा *जानकीजीवन* इत्यादि प्राचीन कथाओं पर आधुनिक दृष्टिकोण से रचे गए महाकाव्य हैं।

अन्य कथानकों पर आश्रित महाकाव्यों में श्रीधर भास्कर वर्णेकर कृत *शिवराज्योदय*; उमाशंकर त्रिपाठी कृत *छत्रपतिचरित*; माधव श्रीहरि अणे कृत *तिलकयशोऽर्णव*; सत्यव्रतशास्त्री कृत *बोधिसत्त्वचरित* एवं *इन्दिरागान्धिचरित;* विश्वनाथ केशव छत्रे कृत *सुभाषचरित;* ब्रह्मानन्दशुक्ल कृत नेहरूचरित; साधुशरणमिश्र कृत गान्धिचरित; पद्मशास्त्री कृत *लेनिनामृत;* रेवाप्रसाद द्विवेदी कृत *स्वातन्त्र्यसम्भव;* वसन्त त्र्यम्बक शेवड़े कृत *स्वामिविवेकानन्दचरित;* रामकुबेर मालवीय कृत *मालवीयचरित;* हरिहरप्रसाद द्विवेदी कृत *गोस्वामितुलसीदासचरित;* द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री कृत *स्वराज्यविजय;* शिवगोविन्द त्रिपाठी कृत *गान्धिगौरव;* अमीरचन्द्रशास्त्री कृत *नेहरूचरित;* रामभद्राचार्य कृत *भार्गवराघवीय* ओगेटि परीक्षित शर्मा कृत *प्रतापरायनीय*; जी. बी. पलसुले कृत *वीरसावरकरचरित* इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

- **खण्डकाव्य**— गीतिकाव्य आधुनिक काल में अपेक्षाकृत लघुकाव्य तथा गीत्यात्मक काव्य भी पर्याप्त रूप से लिखे गए हैं। संस्कृत पत्रिकाओं में प्रकाशित प्रकीर्ण काव्यों की संख्या भी निरंतर प्रवर्धमान है। कुछ गीतों तथा काव्यों में नवीन दृष्टि तथा छन्द के बन्धन को शिथिल करने की प्रवृत्ति भी प्राप्त होती है, फिर भी अधिसंख्य कवि प्राचीन छन्दों तथा गीतों के रूप में ही संस्कृत रचनाएँ करते हैं, भाव की दृष्टि से उनमें प्रत्यग्रता तथा नवीनता अवश्य रहती है। ऐसे काव्यों में विषयवस्तु का वैविध्य दिखाई पड़ता है।

आधुनिक खण्डकाव्यों में म. म. भट्टमथुरानाथशास्त्री कृत *गीतवैभव;* क्षमाराव कृत *सत्याग्रहगीता;* सत्यव्रत शास्त्री कृत *थाइदेशविलास*, *शर्मण्यदेश*, *सुतरां विभाति* (जर्मनी की यात्रा का वर्णन); आचार्यबच्चूलाल अवस्थी कृत *प्रतानिनी;* श्रीधर भास्कर वर्णेकर द्वारा रचित *भारतरत्नशतक, रामकृष्णपरमहंसीय, स्वातन्त्र्यवीरशतक* इत्यादि; जगन्नाथ पाठक कृत *कापिशायनी* एवं *आर्यासहस्राराम;* बटुकनाथ शास्त्री कृत *कल्लोलिनी;* शिवजी उपाध्याय कृत *शक्तिशतक* तथा *कुम्भशतक;* राधावल्लभ त्रिपाठी कृत *सम्प्लव, सन्धान, लहरीदशक, शारदापाद किङ्किणी* एवं आवाहन; भारतभारती तथा राजेन्द्रमिश्र प्रणीत वाग्वधूटी, मृद्वीका, श्रुतिम्भरा एवं मत्तवारणी; शालभञ्जिकादि; श्रीनिवास रथ कृत *तदेव गगनं सैव धरा*; भास्कराचार्य त्रिपाठी कृत, *लघुरघुकाव्य;* हरिदत्तशर्मा कृत

© NCERT not to be republished
Reprint 2025-26

गीतकन्दलिका, उत्कलिका, *लसल्लतिका* एवं *निर्झरिणी* जनार्दन प्रसाद पाण्डेयमणि कृत *निस्यन्दिनी*, *रागिणी*; रमाकान्त शुक्ल कृत *भाति मे भारतम्*; इच्छाराम द्विवेदी कृत *गीतमन्दाकिनी;* हर्षदेव माधव कृत *निष्क्रान्ता:* सर्वे कालोऽस्मि रामसुमेर यादव कृत इन्दिरासौरभम्; निरञ्जन मिश्र कृत *केदारघाटी* आदि उल्लेखनीय हैं।

आधुनिक संस्कृत गीतिकारों में जानकीवल्लभ शास्त्री अपनी अभिनव दृष्टि के कारण विशेष उल्लेखनीय हैं। *काकली* (1935) इनकी गीतियों का सुन्दर सङ्कलन है। इनका अन्य काव्य *बन्दीमन्दिर* कालिदास के *मेघदूत* की भावदृष्टि से अनुप्राणित है। *मेघदूत* की अनुकृति पर दूतकाव्यों की रचना आधुनिक युग में भी पर्याप्त रूप से हुई है, जैसे— श्रीनारायणरथ कृत कपोतदूत; अभिराजराजेन्द्र कृत *मृगाङ्कदूत;* राजगोपाल आयंगर कृत *काकदूत;* दयानिधिमिश्र कृत *सूर्यदूत* इत्यादि। पण्डित रामावतार शर्मा ने *मेघदूत* के विडम्बनाकाव्य (Parody) के रूप में *मुद्गरदूत* की रचना 1910 ई. में की थी।

- **गद्यकाव्य**— आधुनिक गद्यकाव्य भाषा शैली की दृष्टि से कई धाराओं में विभक्त हैं। कुछ लेखक बाणभट्ट की पाञ्चाली शैली को अपना आदर्श मानते हैं, तो कुछ दण्डी की सरल तथा ललित पदावली में आस्था रखते हैं। कुछ लेखक सर्वथा अलंकार रहित विशुद्धोक्ति का विन्यास करते हैं। सामान्यत: आधुनिक संस्कृत निबन्धों में तथा कुछ लघुकथाओं में यही शैली मिलती है। राजेन्द्र मिश्र ने पुनर्नवा कथा संग्रह की भूमिका में आधुनिक गद्य-निर्मित के चार रूप निर्णीत किए हैं— लघुकथा, दीर्घकथा, कथानिका (कहानी) तथा उपन्यास (प्राचीन विधा की कथा तथा आख्यायिका)।

जहाँ तक गद्यकाव्य की विधाओं का प्रश्न है, इस विषय में आधुनिक संस्कृत गद्य लेखक पाश्चात्त्य साहित्यधारा से अधिक प्रभावित हैं। तदनुसार उपन्यास तथा लघुकथा जैसी विधाएँ संस्कृत में भी बहुत लोकप्रिय हैं। कथा एवं आख्यायिका के रूप में जो प्राचीन गद्य विधाएँ थीं, वे प्राय: उपेक्षित हैं।

आधुनिक संस्कृत गद्यकाव्यों में पण्डित अम्बिकादत्त व्यास लिखित *शिवराजविजय;* पंडिता क्षमाराव कृत *कथामुक्तावली* एवं *विचित्रपरिषद्यात्रा;* श्रीपाद हसूरकरकृत उपन्यास *दावानल, सिन्धुकन्या, अजातशत्रु* तथा *चैन्नम्मा;* मेधाव्रत रचित कुमुदिनीचन्द्र; श्रीकृष्ण गोस्वामी कृत *उद्वेजिनी* तथा *आम्रपाली;* केशवचन्द्रदाश कृत *शीतलतृष्णा, दिशा-विदिशा* आदि; रामजी उपाध्याय कृत *द्वासुपर्णा* तथा *पाथेय*; रामशरण त्रिपाठी कृत

Reprint 2025-26

कौमुदीकथाकल्लोलिनी (सिद्धान्तकौमुदी के नियमों के उदाहरणों के रूप में रचित); रामकरण शर्मा कृत *सीमा* तथा *रयीश;* मोहनलाल शर्मा कृत *पद्मिनी;* रामसुमेर कृत *बज्रमणि* उपन्यास इत्यादि प्रमुख हैं। संस्कृत लघुकथाओं के अनेक सङ्कलन प्रकाशित हैं, जिनमें राजेन्द्र मिश्र प्रणीत *चित्रपर्णी* उल्लेखनीय है। आधुनिक कथाकारों में राधावल्लभ त्रिपाठी, राजेन्द्र मिश्र, प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रशस्यमित्र शास्त्री, बनमाली बिस्वाल, अशोक पुरनाटुकर आदि प्रमुख हैं।

- **आधुनिक नाट्य रचनाएँ**— आधुनिक संस्कृत साहित्यकारों ने विपुल मात्रा में संस्कृत नाट्यकृतियों की रचनाएँ की हैं। बहुत-सी रचनाओं का अभिनय भी विभिन्न विशिष्ट अवसरों पर होता रहता है। कुछ नाट्यकृतियाँ इसी उद्देश्य से लिखी गई हैं। इनमें कहीं-कहीं आधुनिक सामाजिक समस्याओं का भी चित्रण किया गया है। कुछ नाटकों की रचना आधुनिक तथा मध्यकालीन महापुरुषों के जीवनचरित को लेकर की गई हैं। अनेक नाटक प्राचीन कथाओं को भी अभिनव दृष्टि से प्रस्तुत करते हैं। प्रमुख संस्कृत रूपकों में मथुरा प्रसाद दीक्षित कृत *वीरप्रताप, शंकरविजय, गान्धिविजय* एवं भारतविजय; हरिदाससिद्धान्तवागीश कृत *मेवाड़प्रताप, बंगीयप्रताप* एवं *शिवाजीचरित*; रामजी उपाध्याय कृत सीताभ्युदय एवं *कैकेयीविजय*; रेवाप्रसाद द्विवेदी कृत *यूथिका, सप्तर्षि-कांग्रेस*; वासुदेव द्विवेदी कृत *भोजराजसंस्कृतसाम्राज्य;* राजेन्द्र मिश्र कृत *प्रमद्वरा*, *विद्योत्तमा*, *प्रशान्तराघव* तथा *लीलाभोजराम, चतुष्पथीय* आदि राधावल्लभत्रिपाठी कृत *प्रेमपीयूष तण्डुलप्रस्थीय, प्रेक्षणसप्तक* (एकांकी) आदि हैं। दीपक भट्टाचार्य कृत *धरित्रीपति-निर्वाचन* (राजनीति की मूल्यहीनता पर आधारित); वीरेन्द्रकुमारभट्टाचार्य कृत *शार्दूलशकट, वेष्टनव्यायोग* (घेराव और हड़ताल पर आश्रित), *लक्षणव्यायोग* (नक्सलवाद का चित्रण), *शरणार्थिसंवाद* (बांग्लादेशी शरणार्थी समस्या पर) तथा शिवजी उपाध्याय कृत *यौतक* (दहेज पर आधारित), *स्वातन्त्र्यशौर्य, प्रतिभापलायन, कालकूट* (ड्रग्स पर आश्रित) विषयवस्तु की नवीनता की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। राजेन्द्र मिश्र कृत *प्रत्यक्षरौरव* में अपराध समस्या, *क्रीतानन्द* में भिक्षा समस्या, *वादनिर्णयन* में झूठे मुकदमों की समस्या तथा *स्वयंवरकेन्द्र* में कन्या विवाह समस्या पर प्रकाश डाला है। कुछ लेखकों ने बहुत अधिक संख्या में एकांकी नाटक, प्रहसन इत्यादि के द्वारा संस्कृत नाट्यसाहित्य को समृद्ध किया है, उदाहरणार्थ— राजेन्द्रमिश्र ने लगभग 75 ऐतिहासिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा व्यंग्यात्मक एकांकी लिखे हैं। हास्य-व्यंग्य-प्रधान प्रहसनों में

Reprint 2025-26

वेंकटाचलम् कृत *विकटकवि*; के.के.आर. नायर कृत *आलस्यकर्मीय;* बटुकनाथ शर्मा कृत *पाण्डित्यताण्डव*; मधुसूदन कृत *पण्डितचरितप्रहसन;* महालिंगशास्त्री *कृत मर्कटमर्दलिका*; राधावल्लभ कृत *मशकधानी*; राजेन्द्रमिश्र कृत नवरसप्रहसन, मण्डूकप्रहसन, इन्द्रजाल तथा वाणीघटकमेलक इत्यादि प्रमुख हैं। संस्कृत नाट्यों की प्रस्तुति आकाशवाणी तथा दूरदर्शन जैसे संचार-साधनों के द्वारा निरन्तर होती रहती है। आदि शंकराचार्य तथा *भगवद्गीता* जैसे पूर्ण चलचित्रों का संस्कृत में निर्माण करके संस्कृत की जनप्रियता की सिद्धि श्री जी.वी. नैयर ने सम्यक् रूप से की है।

- **पत्र-पत्रिकाएँ**— आधुनिक संस्कृत साहित्य को संस्कृत पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान है। इस समय संस्कृत पत्रकारिता अपने शिखर पर पहुँच चुकी है। वस्तुत: संस्कृत पत्रकारिता अन्य भाषाओं की तुलना में कुछ विशिष्ट महत्त्व रखता है। संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से ही आज कन्याकुमारी से हिमालय तक भारत सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, भौगोलिक ऐक्यक अनुभव कर रहा है। संस्कृतपत्रकारिता का आविर्भाव उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में (वर्ष 1866) हुआ। काशी के क्वीसिंह कॉलेज के प्राचार्य सर ग्रिफिथ ने *काशीविद्यासुधानिधि* नामक पत्रिका (जिसका प्रचलित नाम 'पण्डितपत्रिका' था) का शुभारम्भ किया। किन्तु इस पत्रिका के माध्यम से केवल आङ्ग्ल दार्शनिक ग्रन्थों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का संस्कृतानुवाद अथवा विशिष्ट विषय-प्रतिपादक अन्य ग्रन्थ ही प्रकाशित होते थे। वस्तुत: इस पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य था दुर्लभ एवं अप्रकाशित ग्रन्थों का प्रकाशन। इस पत्रिका में अनेक प्राचीन प्रामाणिक संस्कृत ग्रन्थ प्रकाशित हैं। इस प्रकार पत्रकारिता के अनेक विशिष्ट लक्षण इस पत्रिका में दृष्टिगोचर नहीं होते थे। अत: संस्कृत पत्रकारिता का उद्भव वर्ष 1873 में पंडित हृषिकेश भट्टाचार्य के सम्पादकत्व में लाहौर से प्रकाशित *विद्योदय* नामक मासिक पत्र से हुआ मानना अधिक युक्तिसंगत है। यही मासिक पत्रिका बाद में बङ्गप्रदेश से प्रकाशित हुई, जिसके माध्यम से कविता, कथा, ललित निबन्ध, समाचार-पत्र आदि का प्रकाशन होने लगा। इसी वर्ष पटना-जनपद के बांकीपुर से दामोदर शास्त्री ने *विद्यार्थी* नामक संस्कृत-मासिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इतिहास विदों का मानना है कि वर्ष 1875 में *षड्-दर्शनचिन्तंनिका, प्रयागधर्म-प्रकाश:, षड्धर्मामृतवर्षिणी* आदि तीन पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा।

Reprint 2025-26

वर्ष 1879 में *कामधेनु:*, वर्ष 1881 में *विद्यार्थी*, वर्ष 1882 में *काव्य नाटकादर्श*, वर्ष 1885 में *ब्रह्मविद्या*, वर्ष 1888 में *विद्यामार्तण्ड:*, *ग्रन्थमाला* और *आर्यसिद्धान्ता:* नाम से तीन संस्कृत-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई। इसके बाद वर्ष 1888 में केरल से *विज्ञान-चिन्तामणि:* 1889 में *उषा*, वर्ष 1891 में *मानवधर्म-प्रकाश:*, वर्ष 1893 में *संस्कृत-चन्द्रिका*, वर्ष 1895 में *कवि:*, वर्ष 1899 में *शास्त्रमुक्तावली*, वर्ष 1900 में *देवगोष्ठी*, *विद्यार्थिचिन्तामणि:* वर्ष 1901 में *भारतधर्म:*, *ग्रन्थप्रदर्शिनी*, *श्रीकाशी* वर्ष 1902 में *रसिकरञ्जिनी*, वर्ष 1903 में काशी से *सूक्तिसुधा*, वर्ष 1904 में *मित्रगोष्ठी*, वर्ष 1904 में जयपुर से *संस्कृंतरत्नाकर:*, वर्ष 1905 में *मिथिलामोद:*, *विशिष्टाद्वैतिनी* और *विद्वद्गोष्ठी* वर्ष 1906 में *सूनृतवादिनी* नामक साप्ताहिक संस्कृत पत्रिका काशी से प्रकाशित हुईं। इसी वर्ष *केरल-ग्रन्थमाला*, *सद्धर्म:*, *प्रकटनपत्रिकाएँ*, *वीरशैवप्रभाकर:*, *बालमनोरमा*, *विद्यावती*, *वीरशैवमतप्रकाश:*, *विद्वन्मनोरञ्जनी* इत्यादि संस्कृत-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। 1 जून 1907 में त्रिवेन्द्रम से *जयन्ती* नामक प्रथम संस्कृत-दिनपत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसी वर्ष *षड्दर्शिनी*, 'संस्कृरतम्' नामक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ।

वर्ष 1914 में *बहुश्रुतम्*, वर्ष 1915 में *गीर्वाणभारती*, वर्ष 1918 में *संस्कृत साहित्य परिषद्*, वर्ष 1927 में काशी से *ब्राह्मण-महासम्मेलनम्* वर्ष 1934 में *संस्कृतपद्यवाणी*, हैदराबाद से, *कौमुदी* बङ्गल के धुलजोड़ा से *संस्कृत-साहित्यम्*, वर्ष 1935 में बेलगाम से *मधुरवाणी* कोलकाता से *मञ्जूषा* वर्ष 1936 में हरिद्वार से *दिवाकर*, वर्ष 1937 में मुम्बई के भारतीयविद्याभवन से *भारतीविद्या* वर्ष 1939 में *ज्योतिष्मती* नाम से सचित्र हास्य परक संस्कृतपत्र प्रकाशित हुए। वर्ष 1941 में *अमृतवाणी* नाम से वार्षिक पत्रिका बैंगलूरू से प्रकाशित हुई। वर्ष 1942 में *सरस्वशतीसुमन:* नाम से वाराणसेय-संस्कृति-विश्वविद्यालय से एक संस्कृत पत्रिका प्रकाशित हुई। वर्ष 1944 में काशी से *अमरभारती* नाम से पत्रिका प्रकाशित हुई, जिसका मुख्य उद्देश्य था राष्ट्रभाषा रूप में संस्कृत को ही प्रतिष्ठापित करना। वर्ष 1947 में *वार्तापत्र-अन्वी क्षणसमिति* (Press Enquiry Committee) की संरचना हुई। इस समिति द्वारा आदिष्ट था कि संविधान सभा के 'मौलिक अधिकारों' को ध्यान में रख कर वार्तापत्रों की नियमावली की समीक्षा करनी होगी।

Reprint 2025-26

इस प्रकार ऊपर वर्णित इन प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में राष्ट्र के संस्कृत कवि, लेखक एवं पत्रकारों के कथा-साहित्य प्रकाशित हुए। भारत में सर्वप्रथम संस्कृत-पत्रिकाओं का विवरण डा. अर्नेस्ट हास ने दिया पत्रिकाओं का सामान्य परिचय देकर। बाद में मैक्समूलर ने स्वकीय ग्रन्थ में संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन विषय का उल्लेख किया। उन्होंने लिखा कि "संस्कृत ही एक ऐसी भाषा है जो आज भी देश के एक प्रदेश से अन्य प्रदेश तक लोगों के द्वारा बोली एवं समझी जाती है।" एल.डी. बर्नेट् ने अपने ग्रन्थ में पत्र-पत्रिकाओं का यथाशक्य विवरण दिया, जो वर्ष 1886 ई. से 1928 ई. तक प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं का ही है।

विपुलता की दृष्टि से तथा विविधता की दृष्टि से आधुनिक संस्कृत लेखनों को नवीन स्वरूप प्रदान करने का कार्य जो इन पत्रिकाओं ने किया। उनके विशिष्ट संकेत हम इन तथ्यों से पा सकते हैं कि हमारे पास कुछ इस प्रकार की विद्या थी जो पूर्व से अज्ञात थी परन्तु पत्रकारिता के कारण संस्कृत भाषा में प्रसिद्धि पाईं। पुस्तक समीक्षा कार्य, समाचार समीक्षा कार्य, ललित निबन्ध लेखन कार्य, व्यंग्य-विनोद लेखन कार्य आदि विविध कार्य पत्रकारिता का ही फलस्वरूप हैं। विद्वानों का मानना है कि व्यंग्य विनोद-लेखन का प्रारंभ जयपुर से प्रकाशित *संस्कृत रत्नाकर:* के माध्यम से सम्पादक स्व. भट्टमथुरानाथ शास्त्री ने किया है। शास्त्री जी ने पत्रिका के रिक्तस्थानों में विनोदवाटिका इस शीर्षक से व्यंग्य-विनोद लेखन का प्रकाशन प्रारम्भ किया था। इस प्रकार विश्व में कार्टूनों का स्थान शिखर प्राप्त है, पर वह पत्रकारिता का ही अभूतपूर्व फल है। कार्टून एवं हास्य-विनोद आदि विनोदविधा ने आधुनिक संस्कृत साहित्य में किसी एक विधा का प्रतिनिधित्व करते हुए गौरवास्पद स्थान प्राप्त किए हैं।

आधुनिक स्वतन्त्र भारत में संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में अनेक नूतन मासिक, द्वैमासिक, साप्ताहिक, पाक्षिक संस्कृत-पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। पर स्वतन्त्रतापूर्व काल में ऐसी स्थिति नहीं रही। संस्कृत में दैनिक वार्तापत्र का प्रकाशन सर्वथा दुष्कर कार्य था। तथापि 1 जनवरी 1907 से *जयन्ती* नामक प्रथम संस्कृत दिनपत्र केरल के त्रिवेन्द्रम नगर से प्रकाशित हुआ। कोमल मारुताचार्य और लक्ष्मी नन्द स्वामी इस संस्कृत दैनिकपत्र के सम्पादक रहे। किन्तु अर्थाभाव के कारण कुछ दिनों के बाद ही इस पत्र का प्रकाशन स्थगित हो गया।

Reprint 2025-26

अब तक अपने ही देश में 300 से अधिक संस्कृत पत्रिकाएँ (जिन में से कुछ ऑनलाइन भी हैं) संस्कृत भाषा में प्रकाशित हो चुकी हैं। उनमें से 100 से अधिक तो आज की तिथि में प्रकाशित हो रही हैं और पढ़ी भी जा रही हैं। इनमें से कुछ पत्रिकाएँ वार्षिक हैं तो कुछ दैनिक भी हैं। स्वातन्त्र्योत्तरकाल में संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र में दैनिक (मैसूर से *सुधर्मा*, कानपुर से *नवप्रभातम्* आदि), साप्ताहिक (वाराणसी से गाण्डीवम्, अयोध्या से *संस्कृत-साकेतम्* आदि), पाक्षिक (मुम्बई से संविद, *संस्कृतभवितव्यतम्* आदि), मासिक (जयपुर से भारती, बेंगलुरू से *सम्भाषणसन्देशः*, लखनऊ से सर्वगन्धा, वाराणसी से *सूर्योदयः* आदि), द्वैमासिक (वालेशोर से *अमृतभाषा*, पुरी से *लोकभाषासुश्री* आदि), त्रैमासिक (जयपुर से *स्वररमङ्गला*, लखनऊ से *अजस्रा* आदि), षाण्मासिक (प्रयाग से *कथासरित्* तथा भोपाल से *पद्यबन्ध* आदि) तथा वार्षिक (नई दिल्ली से संस्कृत *प्रतिभा* आदि) संस्कृत पत्रिकाओं का प्रकाशन नियमित हो रहा है। प्रयाग से ही 1999 से आज तक आधुनिक संस्कृत साहित्य की समीक्षा पत्रिका प्रकाशित हो रही है। इसके अतिरिक्त 100 से अधिक शोधपत्रिकाएँ हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत तीनों भाषाओं में प्रकाशित हो रही हैं।

Reprint 2025-26

ध्यातव्य बिन्दु

- पण्डितराज जगन्नाथ (सत्रहवीं शताब्दी ई.) के बाद भी रचनाकार्य आज तक जारी है।
- फ़ारसी और अंग्रेजी को राजभाषा पद मिलने एवं राष्ट्रीय संरक्षण के अभाव में संस्कृत रचना में शैथिल्य।
- वृहद भारतीय जनता के संस्कृत से अनुराग के कारण संस्कृत की प्रतिष्ठा में निरन्तरता।
- बिहार, बंगाल व ओडिशा में ब्रिटिश शासकों द्वारा संस्कृत को राजभाषा पद की प्राप्ति।
- 1784 ई. में सर विलियम जोन्स द्वारा कालिदास के नाटक अभिज्ञानशाकुन्तल का अंग्रेजी में अनुवाद तथा यहीं से संस्कृत का आधुनिक काल आरम्भ।
- 1793 ई. में जॉन फोस्टर द्वारा जोन्स के अनुवाद का जर्मन भाषा में रूपान्तर।
- जर्मन कवि गेटे द्वारा शाकुन्तल नाटक की भूरि-भूरि भावपूर्ण प्रशंसा।
- आधुनिक काल में महाकाव्य, खण्डकाव्य, नाटक, एकांकी, कथानिका, लघुकथा, उपन्यास आदि के रूप में लेखन कार्य जारी।
- आधुनिक साहित्य में आदर्शवाद के साथ यथार्थ का समाधानपरक चित्रण।
- आधुनिक रचनाओं में व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के परिदृश्य की संवेदना का बहुल अङ्कन।
- आधुनिक संस्कृत साहित्य में अन्य भाषाओं की प्रख्यात कृतियों का संस्कृतानुवाद।

© NCERT not to be republished

Reprint 2025-26

अभ्यास-प्रश्न

प्र.1. नीचे लिखी रचनाओं के लेखकों के नाम लिखिए—
- (क) *पारिजातहरण*
- (ख) *श्रीकृष्णचरितामृत*
- (ग) *रुक्मिणीहरण*
- (घ) *सीताचरित*
- (ङ) *जानकीजीवन*

प्र. 2. नीचे लिखी रचनाओं की काव्यविधा को लिखिए—
- (क) *वामनावतरण*
- (ख) *गणपतिसम्भव*
- (ग) *बोधिसत्त्वचरित*
- (घ) *कुम्भशतक*

प्र. 3. गद्यकाव्य और लेखकों को मिलाइए—

गद्यकाव्य	**लेखक**
कथामुक्तावली	रामकरण शर्मा
दावानल	रामशरण त्रिपाठी
कौमुदीकथाकल्लोलिनी	क्षमाराव
सीमा	श्रीपादहसूरकर

प्र. 4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
- (क) रेवा प्रसाद द्विवेदी कृत .... महाकाव्य है।
- (ख) शार्दूलशकट वीरेन्द्रकुमार भट्टाचार्य कृत .... है।
- (ग) राधावल्लभ त्रिपाठी कृत .... नाटक है
- (घ) प्रमद्वरा नाटक .... रचित है।

प्र. 5. नीचे लिखे लेखकों की रचनाओं के नाम लिखिए—

शिवजी उपाध्याय

रामावतार शर्मा

जानकी वल्लभ शास्त्री

बटुकनाथ शास्त्री

राजेन्द्रमिश्र

प्र.6. संस्कृत चलचित्रों का नामोल्लेख कीजिए।

Reprint 2025-26

© NCERT not to be republished